Dr.Raman Kumar Thakur
Assistant professor (Guest)
D.B.college, jaynagar madhubani,
L.N.MU.Darbhanga.

Class:-B.A.part-2(Hons)
And General & Subsidiary

Date:-25 April 2020

INDIAN ECONOMICS
(Paper_4th)

" भारत के प्राकृतिक संसाधन →भूमि , जल ,एवं वन" (Natural resources of India - Land, Water & Forest)

→ प्राकृतिक साधनों से हमारा आशय उन प्रकृतिदत्त भौतिक साधनों से है जिन्हें मनुष्य अपने प्रयत्नों से उत्पन्न नहीं कर सकता। अतः प्राकृतिक साधन प्रकृति की देन है।
प्राकृतिक साधनों में भूमि, जल ,खनिज पदार्थ, समुद्री साधन ,जलवायु वर्षा आदि का समावेश किया जाता है। इस दृष्टि से प्राकृतिक साधनों को तीन भागों में बांटा जा सकता है :→

1) वे साधन जो उपयोग करने पर समाप्त हो जाते हैं, जैसे खनिज पदार्थ ।
2)वे साधन जो कभी समाप्त नहीं होते, जैसे जल, वन- संपदा इत्यादि ।
3) वे साधन जो ज्ञात एवं अज्ञात दोनों रूपों में होते हैं ।इसमें पृथ्वी पर खुली संपदा व विभिन्न खोजों से प्राप्त संसाधन सम्मिलित किए जाते हैं।

*महत्त्व (Significance):→ किसी देश का आर्थिक विकास उस देश के प्राकृतिक साधनों पर निर्भर करता है प्राकृतिक साधनों की सामूहिक शक्ति ही देश के आर्थिक विकास की सीमा एवं प्रकृति निर्धारित करती है संसार में जिन देशों में ये साधन प्रचुरता से विधमान है उन देशों में आर्थिक विकास की असीम संभावनाएं हैं परंतु यह उल्लेखनीय है कि प्राकृतिक साधनों की संपदा मात्र से ही किसी देश का आर्थिक विकास नहीं हो जाता, क्योंकि प्राकृतिक साधन निष्क्रिय होते हैं और अपने आप आर्थिक विकास का आरंभ नहीं कर सकते हैं वैज्ञानिक ,तकनीकी और मानवीय प्रयास के द्वारा उनके विदोहन और उपयोग की आवश्यकता पड़ती है।

* प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता हैं :-

1) भूमि एवं मिट्टी(Land and soil):- प्राकृतिक संसाधनों में भूमि का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है देश के आर्थिक कार्यकलाप के लिए भूमि आधारभूत होती है सच तो यह है कि समाज का सारा अस्तित्व और विकास इसी पर आश्रित है ।भूमि के क्षेत्रफल के साथ-साथ भूमि प्रयोग की संरचना भी महत्वपूर्ण स्थान

रखती है। भारत में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 92.8% भू-भाग के प्रयोग संबंधी आंकड़े प्राप्त होते हैं सीएस 7.2 %भूभाग के विषय में कोई लिखित रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है।

2) जल संसाधन(Water Resources):- भारत में जल संसाधन सर्वाधिक महत्व का प्राकृतिक संसाधन है जल संसाधनों की दृष्टि से भारत का विश्व में तीसरा स्थान है ।प्रथम व द्वितीय स्थान क्रमशः कनाडा व अमेरिका का है। जल संसाधन का महत्व भारत की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या और देश के आर्थिक व सामाजिक विकास के संदर्भ में जल संसाधनों का बड़ा महत्व है पीने के लिए जल की आवश्यकता तो होती ही है कृषि उद्योग जहाजरानी आदि क्षेत्रों में भी जल संसाधनों का विशेष महत्व है। संक्षेप में जल संसाधनों के महत्व का वर्णन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है:-

1) कृषि के लिए महत्व(Importance for Agriculture)

2) शक्ति के लिए महत्व(Importance for power)

3) कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास(Development of Cottage and Small industries)

4) हरित क्रांति की सफलता(Success of Green Revolution)

5) आंतरिक जल परिवहन का विकास (Development of Internal water Transport)

6) रोजगार (Employment)

* (3) वन संसाधन
(Forest Resources):-

भारत ही नहीं विश्व के प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था में वनों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है "पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में " एक उगता हुआ वृक्ष राष्ट्र की प्रगति का जीवित प्रतीक होता है। एक वृक्ष को काट डालना आसान है परंतु उसे उगाने में एक पीढी गुजर जाती है 'भगवत गीता 'में भी लिखा है वृक्ष हम सब लोगों को जीवन प्रदान करते हैं इसलिए वृक्षों की रक्षा करनी चाहिए।"

* भारतीय वनों के लाभ(Advantage Of indian Forest) :- भारतीय वनों से प्रत्यक्ष लाभ होते हैं जो इस प्रकार से हैं:-1) वन बहुमूल्य लकड़ियों के भंडार हैं।
2) वनों से हमें इंधन के लिए आवश्यक लकड़ी प्राप्त होती है।
3) भारतीय वनों में कुछ ऐसी जड़ी बूटियां पाई जाती है जिससे अनेक प्रकार की औषधियां तैयार की जाती है।
4) वनों में उत्तम चारागाह मिलते हैं जिन पर पशु पाले जाते हैं।
5) वनों में वृक्षों की पत्तियां गिरकर मिट्टी में मिल जाती है जो सर गल कर उत्तम खाद में परिणत हो जाती है।
6) सहायक उत्पादन के रूप में रबड़ तारपीन गोंद चंदन आदि औषधियां लाख आदि वनों से प्राप्त होते हैं।
7) सरकार को वनों से राजस्व प्राप्त होता है।
8) देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।